हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाय।
वचन गाइए प्रेमनां, कांई तेना अरथज थाय।। ५ ।।

हाथ चलाकर दिखाइए। आप पैरों से ठुमका लगाकर बताइए। प्रेम वाले ऐसे गीत गाइए जिनका कुछ अर्थ हो।

कंठ करीने राग अलापिए, कांई स्वर पूरे सकल साथ।
वेण वेणा रबाब सों, कांई ताल बाजे पखाज।। ६ ।।

अपने गले से राग अलापिए। हम सब साथ स्वर पूरा करेंगे—बांसुरी, वीणा, सारंगी, नाल और पखावज सब बाजे बजेंगे।

करताल मां बाजे झरमरी, कांई श्रीमंडल हाथ।
चंग तंबूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ।। ७ ।।

करताल में झांझरी बजेगी। हाथ से श्रीमण्डल बजेगा। मृदंग और तानपूरा स्वर मिलायेंगे तथा सब साथ नाचेगा।

भूखण बाजे भली भांतसूं, धरती करे धमकार।
सब्द उठे सोहांमणा, उछरंग वाध्यो अपार।। ८ ।।

नृत्य में आभूषण बजते हैं। धरती में धमक उठती है। सुहावने स्वर उठते हैं। इस प्रकार से बहुत आनन्द बढ़ा है।

निरत करी नरम अंगसूं, कांई फेरी फरया एक पाय।
छेक वाले छेलाईसूं, तत्ता थेई थेई थाय।। ९ ।।

वालाजी नरम अंग से, एक पांव पर नाचे। चतुराई से पैर से ठेका देते हैं, तो 'तत्ता थेई तत्ता थेई' का स्वर गूंजता है।

एक पोहोर आनन्द भरी, कांई रंग भर रमिया एह।
साथ सकल मां वालेजी ए, रमतां कीधां सनेह।। १० ।।

एक प्रहर तक आनन्दपूर्ण नृत्य का खेल खेला गया। वालाजी ने नृत्य करके सुन्दरसाथ में प्रेम बढ़ाया।

आनंद घणो इंद्रावती, वालाजीने लागे पाए।
अवसर छे कांई अति घणो, वाला रासनी रामत मांहें।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बहुत खुश होकर वालाजी के चरणों में प्रणाम करती हैं और कहती हैं, हे वालाजी! रास की रामत खेलने का यह बड़ा अच्छा मौका है।

ते सर्वे चित धरी, अमसूं रमो अति रंग।
कहे इंद्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि आपने जो नाचने का ढंग सिखाया है, वह हमने सीख लिया है। हमारी बड़ी इच्छा है कि अब आप हमारे साथ नाचो।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ५९४ ।।

चरचरी छंद

मृदंग चंग, तंबूर रंग, अति उमंग, गावती सखी स्वर करी।। १ ।।

मृदंग, चंग, तंबूरा के स्वर के साथ उमंग दिल में भरकर सखियां आनन्द के साथ गाती हैं।

Nijanand App

करताल ताल बाजे विसाल, वेण रसाल, रमत रास सुन्दरी।। २ ।।

करताल में ताल बजती है। बांसुरी मीठी बजती है। ऐसे में श्री इन्द्रावतीजी रास खेल रही हैं।

नार सिणगार, भूखण सार, संग आधार, निरत करे सनंधरी।। ३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी ने शृंगार सजाया। अच्छे आभूषण पहन कर वालाजी के साथ सुन्दर ढंग से नृत्य करती हैं।

घमझणाझण, जोडरणारण, बिछुडाठणाठण, छेकवाले फेरी फरी।। ४ ।।

पैर के पटकने से झनकार उठती है और आभूषणों के टकराव से रणकार उठती है। पैर के बिछुओं से ठन-ठन का स्वर उठता है। इस प्रकार श्री इन्द्रावतीजी घूम-घूमकर कूदती हैं।

वचन गाए, हस्तक थाए, भाव संधाए, देखाडे वालो खंत करी।। ५ ।।

गीत गाती हैं। ताली बजाती हैं। भाव दिखाती हैं और वालाजी को रिझाती हैं।

हांस विलास, सकल साथ, लेत बाथ, मध्य रामत हेत करी।। ६ ।।

सब सखियां नृत्य की रामत में बड़े आनन्द के साथ हंसती हुई वालाजी से लिपट जाती हैं।

वेख वसेख, राखी रेख, सुख लेत, वाहंत मुखे वांसरी।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी का भेष मनमोहक है। उन्होंने नृत्य करके सब सखियों की लाज बचाई है। वह रस भरी बांसुरी अपने मुख से बजाकर आनन्द लेती हैं।

धमके धारुणी, गाजती गारुणी, चांदनी रैणी, जोत करे जामंत री।। ८ ।।

धरती में धमक उठती है। आसमान गरजता है। चांदनी रात की चांदनी चमाचम चमक रही है।

रंग वनमां, सोभित जमुना, पसु पंखीना, सब्द रंगे थंत री।। ९ ।।

वन में आनन्द छाया है। यमुनाजी शोभायमान हैं। पशु-पक्षियों की आवाज हो रही है।

पसु पंखी, जुए जंखी, मिले न अंखी, सुख देखी रामत री।। १० ।।

ऐसे सुख की रामत देखकर पशु-पक्षियों की भी पलक नहीं झपकती। वे एकटक होकर आनन्द से देख रहे हैं।

निरत करे, खंत खरे, फेरी फरे, इंद्रावती एक भांत री।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी दृढ़ विश्वास के साथ घूमती हैं तथा विशेष प्रकार का नृत्य करती हैं।

वालती छेक, अंग वसेक, रंग लेत, छबके चुमन देत री।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कूदती हैं। विशेष ढंग से अंग को मोड़ती हैं तथा चुम्बन देकर आनन्द लेती हैं।

।। प्रकरण ।। ३० ।। चौपाई ।। ६०६ ।।

राग कालेरो

हमचडी सखी संग रे।
आपण रमसुं नवले रंग, सखी रे हमचडी।। टेक।।

Nijanand App